Vol 3 Issue 4 Oct 2013

Impact Factor : 1.2018 (GISI)

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume-3, Issue-4, Oct-2013
ISSN 2231-5063

Available online at www.aygrt.isrj.net

महाराष्ट्र की आदिम जमात के कुछ प्रचलित लोकवाद्य

सरिता इंगळे
संगीत विभाग प्रमुख स्व. सी. एम. कढी कला महाविद्यालय, परतवाडा, जि. अमरावती

सारांश :आदिम जमात अर्थात आदिवासी यह अंग्रेजी के 'ॲबॅरिजिनास' इस शब्द का प्रचलित मराठी पर्यायी शब्द है, वास्तव में इन्हें बनवासी कह सकते है। आदिवासीयों के हर कार्य में गायन, नृत्य तथा वाद्यों का विशेष महत्व रहता है । गाने की एकही पंक्ति वे बारबार गाते है, इनके गीत, समुहगीत, नृत्य इनमें ताल को ज्यादा महत्व दिया जाता है अर्थात ज्यादातर लय तथा थाप को वे महत्व देते है । अपार श्रम, मेहनत के उपरांत भी दुःख और दैन्य होते हुये वे आनंद प्राप्त करने के लिए संगीत का प्रयोग करते है। इसे ही लोकसंगीत कहा गया है। मनुश्य संवेदनाऍं विश्व में एक जैसी होने के कारण लोकसंगीत विश्व में एकसमान है। यह आदिवासी स्वनिर्मित वाद्यवादन के स्वयंअधिकारी है। इसी वाद्यों में भावप्रतिमा ढुंढना, वाद्य के स्वभाव को समझना, काव्य तथा नाद के सौंदर्य को जानना और सहजतापूर्ण गायन उनके संगीत में विराजमान है। लोकसंगीत सभी संगीतधाराओं का मूल है, उनकें काव्य तथा वाद्य चेतनामय रहकर उनमें स्वरसौंदर्य छिपा हुआ रहता है, यही संगीत संस्कृति का जतन तथा दर्शन कराता है। लोकसंगीत आदीम जमात के आदि कार्यो की निष्पत्ती है। जिस तरह विश्व के अनेक वाद्य निर्मिती के निर्माणक उसी प्रदेश की आदिम जमात है वैसे ही महाराष्ट्र राज्य के आदीम जमात के कुछ लोकवाद्य स्वयंनिर्मित है यह सिध्द हुआ है। इसी कारण महाराष्ट्र की आदिम जमात के कुछ प्रचलित लोकवाद्य का वर्णन प्रस्तूत शोधनिबंध में करने का प्रयास किया हुआ है।

प्रस्तवाना :

'अनेकता में एकता' यह संकेत देते हुये महाराष्ट्र में विभिन्नता तथा विशिष्टता लिए हुये धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परंपराऍं है। यहॉ पर उॅचे परबत, सुपीक नदियॉ, डोंगरदरी यह नैसर्गिक सौंदर्य होते हुये इसके विपरीत बात यह है की वहॉ कें निवासी अर्थात आदिम जमात जिन्हें अच्छा भोजन भी नसीब न हो आधे पेट खाली ऐसे दिन बिताने पडते है, सुख तो बहोत दूर की बात है, फिर भी यह हताश, निराश न होकर संगीत से अपना आनंद स्वयं खोजते है, इनके नृत्य और गाने की कला वाद्य के ताल, थाप पर ज्यादा निर्भर रहते है। इनके बनाये हुये वाद्य अधिकतर जंगल की ही चीजों से निर्मित होती है, जैसे – जंगल छोटे–बडे झाड 'सागवान, आम, बड और अन्य जनावरों की चमडी, हिरन के सिंग घोडे के बाल, पक्षियों के रंगीन पंख। ऐसे अनेक चीजों का उपयोग वाद्यनिर्मिती के लिए वह करते है। आदिवासीयों के गायन वादन, नृत्य में संकेत तथा कल्पनाबध्द यह स्वयं के गुणधर्मोनुसार अभिव्यक्त होते है। उन्हें किसीप्रकार के साहित्यशास्त्र का अध्ययन न होते हुये भी उनमें संगीत का उपजत गुण पाया जाता है। नृत्य के समय इन सभी वाद्यों का प्रसंगानुरूप वादन करते हुये यह लोग आसमंत तथा पूर्ण ब्रम्हांड को जैसे 'नादब्रम्हमय' करते हुये आनंद का जल्लोष करते है। इन्ही के लोकसंगीत से सभी संगीत शाखाओं का निर्माण हुआ है, ऐसे ही महत्वपूर्ण आदिम जमात के सांगीतिक कार्य महाराष्ट्र में भी है। इसीसे उनके प्रचलित वाद्यों के निर्माण का विवरण प्रस्तूत शोध निबंध में है

आदीवासी यह अंग्रेजी के ॲबॅरिजिनास इस शब्द का प्रचलित मराठी पर्यायी शब्द है। सच पूछिये तो उन्हें वनवासी कहना चाहिए क्योंकि आदिवासियों की अलग अलग परंतु प्रचीन मानव संस्कृति है, सीर्फ उनके रहने की जगहे बदली हुई है। आदिवासी यदि वन में रहते है तो वे वनवासी, पहाडो में रहते है तो गिरीजन कहलाए जाते है। आदिवासी भारत के आद्य निवासी है। जब भारत में पश्चिम वायव्य, ईशान्य इन दिशाओं से द्रविड, इंडो आर्य व मंगोलियन लोगों ने प्रवेश किया तब, आत्मरक्षण करने में समर्थ्य न होने के कारण एवं कम संख्याबल वाले ये लोग पहाड, दरियों और जंगलों के आश्रय से रहने लगे। पर्वत, नदियॉ, पहाड, दरियों जैसी नैसर्गिक साधन सम्पत्ती तो उन्हें मिली पर तरक्की की राह नहीं मिल पाई, कई बार आधा पेट भोजन करके तो कई बार भूखे रहने के कारण उसी दयनीय दशा में रहते हुये उनकी प्रगती नहीं हो पाई। 'आदीवासी' समाज दूसरे सभी घटकों से पिछडे हुए है क्योंकि उन दुर्गम भागों में सुविधाओं की कमियॉ है। उनकी भाषा सीर्फ बोली है उसमें लिपी नहीं है। स्वतंत्र लिपी न होने के कारण यहीं बोली अगली पिढी को मौखिक रूप से ही संक्रमित की गई। यह मौखिक परंपरा मूल संस्कृति होने के कारण यहीं बोली अगली पिढी को मौखिक रूप से ही संक्रमित की गई। यह मौखिक परंपरा मूल संस्कृति होने के कारण यहीं हृदय की भाषा बन गई इसलिये वह सदियों से टीकी हुई है याने की विशिष्ट भू प्रदेश व खुद की बोली भाषा इनमें पाई जाती है। जिस प्रकार महाराष्ट्र में आदीवासीयों की अनेक जातियॉ और बोलीभाषाऍं है उसी प्रकार आदिवासीयों के निवास के भौगोलिक वर्गीकरण भी अलग–अलग है। इन को तिन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1.सह्याद्री विभाग :–

इनमें नाशिक, अहमदनगर, रत्नागिरी, रायगड, ठाणे, पुणे का समावेश है और वहां मल्हारकोळी, ढोरकोळी, सोनकोळी, वारली, कोकणा, कातकरी, महादेव कोळी, ठाकुर आदि जमाते रहती है।

2.सातपुडा विभाग :–

धुले जिल्हे के अक्रानी तालुके में पावरा भिल्ल यह तलोदे, शहादे इस जीले में तथा कोरकु अमरावती जिले के मेलघाट विभाग में और विशेषतः धारणी जिले में रहते है।

3.गोंडवाना विभाग :–

इस विभाग में विदर्भ के चंद्रपूर, वर्धा, नागपूर, गडचिरोली इन भागों में गोंड, कोलाम, गोवारी, कोरकु, परधान, माडिया इत्यादी जमाते रहती है।

भारतीय संविधान में आदिवासियों को ''अनुसूचित जमाति'' इस प्रकार संबोधित किया जाता है। ''महाराष्ट्र राज्य का भौगोलिक क्षेत्र 3.07 लाख चौ.कि.मी. है, उसमें सहे 0.50 चौ कि. मी. क्षेत्र आदीवासी उपाययोजना के तहत उपयोग में लाया जाता है। महाराष्ट्र में 2001 की जणगणना नुसार आदिवासियों की जनसंख्या 85 लाख 77 हजार 276 है याने महाराष्ट्र की जनसंख्या में से 8.9 प्रतिशत जनसंख्या आदिवासियों की है। देश की प्रमुख आदिवासी जनसंख्या में से महाराष्ट्र का 4 था क्रमांक है।''

आदिवासियों के हर कार्य में गायन, नृत्य और वाद्यों का विशेष महत्व है। गाने की एक ही पंक्ति वे बार–बार गाते है, समूहगीत उनकी विशेषता है और ताल को ज्यादा महत्व दिया जाता है, याने उनके गीतों में शब्दों से ज्यादा लय और थाप को ज्यादा महत्व दिया जाता है। उनकें संगीत वाद्य जैसे श्रोताओं से उन प्रसंगों का संवाद करके अपनी संस्कृति दूसरों को बताने का तथा संस्कृति के जतन का प्रयत्न करते है। ''आदीम संगीत यह उसी जमातसे संबंधीत दैनंदिन तथा ऋतुओं से इतना बंधा हुआ रहता है कि उनके गीत–नृत्यादि के अस्तित्व की कल्पना अलग से नहीं कर सकते। वे जानते है की मेहनत करने के उपरान्त भी दुःख और दैन्य के होते हुए यदि आनंद प्राप्त करना है तो उसका मार्ग संगीत है। संगीत से उनका काफी नजदिक का संबंध है। जैसे –जैसे जातियॉ विकसीत होती गई उनका ज्ञान बढने लगा। दूसरे अभ्यासक भी इनके संस्कृति का चिंतन करने लगे। उनपर अभ्यास होने लगा, इस संदर्भ में आगे जाकर श्री रानडेने संगीत के चार प्रकार बताए जिसमें सबसे पहले आदिवासी संगीत का उल्लेख किया गया । याने आदिवासी संगीत, लोकसंगीत, शास्त्रीय संगीत तथा लोक प्रसिद्ध संगीत इन पर भाश्य करते हुए रानडे जी कहते है की– आदीवासी या प्राचीन संगीत का उगम मानववंशशास्त्र पूर्वग्रह में पाया जाता है, जबकी शास्त्रीय एवं कला संगीत

सरिता इंगळे , "महाराष्ट्र की आदिम जमात के कुछ प्रचलित लोकवाद्य"
Golden Research Thoughts Vol-3, Issue-4 (Oct 2013): Online & Print

सौंदर्यवाद से प्रेरित है और लोकप्रसिध्द का तात्पर्य तकनीकी सहायता से निर्मित संगीत है।

दूसरे तरह का वर्गीकरण संस्कृति के आधार पर किया गया है जिन्हे कल्टीवेटेड एवं अनकल्टीवेटेड संगीत कहा गया है। लोकसंगीत से तात्पर्य है उस संगीत का जो आम लोगों के योगदान फलाफुला और पनपा है। मनुष्य संवेदनाएँ विश्व में एक जैसी होने के कारण यह लोकसंगीत विश्व में एक समान है। संगीत आत्मअभिव्यक्ति का साधन है।

आदीवासी संगीत सबसे प्राचीन संगीत माना जाता है। इसमें गीत गायन नृत्यात्मक होकर संस्कृति दर्षाने वाले होते है एवं प्रमुख रूप से ये सभी कियाएँ वाद्यों पर निर्भर करती है। उनकें वाद्य स्वनिर्मित और ज्यादातर उसी परिसर के झाड पत्ती, फूल और दूसरी वस्तुओं से निर्माण किए जाते है। याने की वाद्य और वाद्यवादन यह आदीवासी जीवनशैली का महत्वपूर्ण साधन है। गाने में और नृत्य में ताल का सच्चा आनंद लेकर संगीतमय वातावरण में संस्कृति अभिलाशी होकर वे आनंद व्यक्त करते हैं। आदिवासियों में तंबोरा, सारंगी, सितार, विणा, ये वाद्य ज्यादा प्रमाण में पाए नहीं जाते परंतु मुख की हवा से सुशीर वाद्य जैसे की–बासरी, पावा ये वाद्य बजाये जाते है। जंगल की लकडी, सींग, मट्टी, इ. जंगल में उपलब्ध वस्तुओं से वाद्य तयार किए जाते है। कुछ जातियॉ नाक से, या हात की थाप से वाद्य बजाते है, इनमें ढोल, नगारा, ढोलक ये वाद्य ज्यादा प्रचलित है। घंटे का और घुंगरूओं का उपयोग वे नृत्यसंगीत में करते है। ''विदर्भ की परधान इस गोंड जमात में किंगरी या बनावाद्य के सुरों पर मृत पूर्वजों के गुण गाए जाते है। परधान बना वाद्यपर बहोत प्यार करते है।'' ये सभी वाद्य वे खुद बनाते है। रंग बिरंगी गोंडे, रंगीत मणी, पक्षियों के रंगीन पंख, छोटे आईने, रिबीन जैसी छोटी–छोटी वस्तुओं से अपने वाद्य सजाते है। इस आदिम संस्कृति ने जतन कीए हुए संगीत एवं वाद्य विलोभनीय तथा अजरामर है। ऐसे ही महाराष्ट्र राज्य की आदिम जमात की संस्कृति के कुछ लोक वाद्यों का विवरण निम्ननुसार है –

ढोल– ढोल वादन यह उल्हास और आनंद का प्रतिक है, बकरी की चमडी से बनाया हुआ यह वाद्य है। ढोल बजाने से पहले उसे थोडा गरम किया जाता है, ढोल एक बाजु से दो लकडीयों से और दूसरी तरफ से हातों से बजाया जाता है। ढोल कभी जमीनपर रखकर कभी गले में लटकाकर बजाया जाता है। ढोल की आवाज गंभीर, घुमनेवाला होता है मंगलप्रसंगी ढोल बजाकर उसपर आदीवासी गाने गाते है और नृत्य करते है।

ढोलक– यह वाद्य आम के या वटवृक्ष की पोकला लकडी के बुंदे से बनाया जाता है। हातो की उंगलियों से ढोलक बजाकर और थाप देकर नृत्य करनेवालों को प्रोत्साहित किया जाता है।

नगारा– ढोल से छोटे आकार का यह वाद्य है। पावरी जमात की पावरी भाषा में इसे 'तुतडी' कहते है।

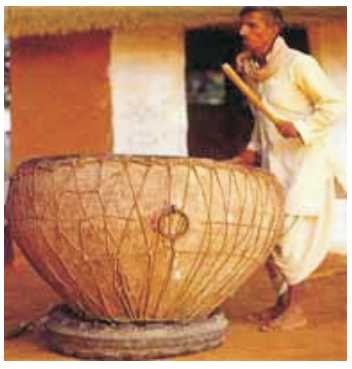

डफ – गोल किनारी या कडियों पर कसकर चमडी लगाते है। यह वाद्य छोटी लकडियों से बजाया जाता है। इसे बजाने से पहले हल्का सा गरम करते है।

मादंळ/मादर– सागवान की लकडी के पोकल गोल भाग के दोनों बाजु से चमडी विणकर यह वाद्य तयार करते है। इसका जो बडा मुख होता है उसपर चिक्की लगाई जाती है।

घंगडी– इसमें दो लौकी होती है। एक तरफ से तेडी आकार की लकडी की काठी बैठाई जाती है। इस वाद्य की रचना विणा के जैसी ही होती है। इसकी खुटीयॉ भी विणावाद्य जैसे ही होती है।

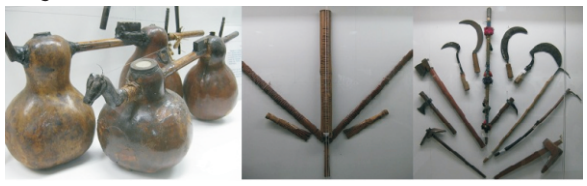

तरपा– सुखी लौकी, बांस की नली और ताड के पत्ते इनसे यह वाद्य बनाया जाता है। सपेरे की पुंगी की तरह दिखनेवाले इस वाद्य में बांस की नली एक तरफ और दूसरी तरफ लौकी का मुँह होता है। वारली लोग उत्सव के दौरान इस वाद्य के ताल पर रात भर नाचते है।

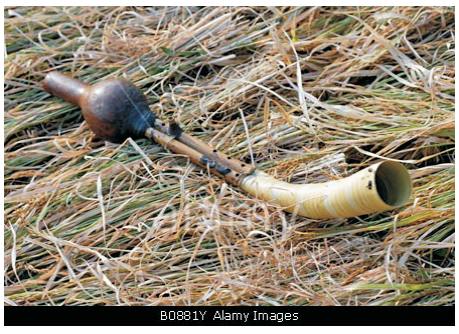

काथ्या– यह वाद्य तांबा या कथील के बरतन से बनाए जाते है। बर्तन के उपरी भाग पर चमडी चढ़ाई जाती है। उस पर लंबे बाल लगाकर उन्हें छेड़ने से उसमें से मधूर ध्वनी उत्पन्न होती है।

तुनतुना – खाली बर्तन निचे की ओर से चमडी खिच कर लगाते है। और उसपर घोडे के बाल या तार बैठाएँ जाते है। उस पर एक लकड़ी होती है। इस वाद्य को लकड़ी या उंगली के आघात से बजाते है। इस वाद्य को ढोलकी के साथ बजाया जाता है।

ताशा– यह टोपली के आकार का चमडे का वाद्य है। गले में लटकाकर, हाथ में लकडी लेकर इसे बजाया जाता है।

किंगरी– यह तंतूवाद्य धनकुली के सहायतासे बजाते है। इसमें तार की बजाए घोडे का बाल बैठाया होता है। यह व्हायोलीन की या सारंगी की आदिम अवस्था हो सकती है। इसे थोटी भी कहते है। 'भराडे' यह नाग पंथीय जमात किंगरी बजाकर भिक्षा मांगकर पेट भरते है।

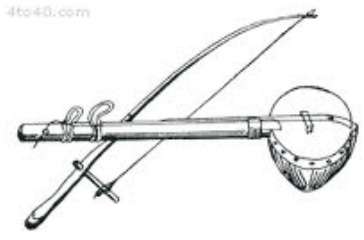

टिमकी– मीट्टी के कटोरे पर चमड़ी बांधकर यह बनाते है। कमर पर बांधकर छोटी लकडी से इसे बजाते है।

चिटकोरा– इसे चिपळी की बड़ी आवृत्ती कहते है। इसे एक ही हाथ में लेकर बजाते है।

कुंडुडी– यह कटोरी की तरह होती है। इसका पृष्ठ भाग 12 इंच का होता है। इसे बारीक लकडी से बजाते है।

तूर– पितल के या कासे की थाली पर तूवर की दंडी मोम की सहायता से खड़ा करके लगाते है। इस लकड़ी पर उपर से नीचे उंगलियॉ फिराने पर मधूर स्वर निकलती है।

पिरी– हिरण के सींग मुंह से बजाते है उसे पिरी कहते है। हिरण ण के सींग, लकडी तथा सुखी लौकीसे यह वाद्य तयार किया जाता है।

घुंगरू – एक खोखले गोल पितल बर्तन में एक छोटा पत्थर ड़ालकर और उसे हिलाकर मधुर ध्वनी निकलती है। उसे घुंगरू कहते है।

बना–यह वाद्य परधान जाती का प्रिय वाद्य है। यह वाद्य वैशाख महिने के किसी रविवार को बनाते है। उस दिन वे उपवास करते है। जंगल में से कोई झाड चूनकर उसे बली देते है। दूसरे दिन वह झाड तोड़कर देव–देवता के गाने गाते –वाद्य बजातु हुये इसे तैयार करते है। रोज सुबह थोडा बहुत बना यह वाद्य बजाकर दिन की शुरूवात करते है।

टिपर्‌या– लकडी गोल करके इसे बनाते है। इस वाद्य के डंड़े दोनों तरफ से घिसे हुये रहते है।

पावा– डफ के साथ प्रमुख रूपसे यह वाद्य बजाते है। यह बासुरी से बड़ा होता है याने की ढाई से तीन फुट लंबे होते है। इसे तेल लगाकर इसका ध्यान रखा जाता है।

अर्थात उपरोक्त सभी विषयों से यह लगता है की गीत, संगीत और नृत्य आदि क्रियाओं में वाद्यों की साथ होना आवश्यक है। वाद्यों का संगीत में महत्व ये लोग जैसे अपनी संस्कृति का हिस्सा समझते हुये दर्शाते है। इतना ही नहीं ताल से मिलते जुलते आवाज वे अपने मुख से हाकार, हुंकार देकर निकालते है और नाद ब्रम्ह में विलिन होकर घुल मिल जाते है। इस प्रकार महाराष्ट् की आदिम जाती के लोकवाद्य सचमुच वर्णनीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.डॉ. हिवाळे अल्का, आदिवासी लोकगीतातील स्त्री जीवन, कैलास पब्लिकेशन गोकुलवाडी, औरंगाबाद 1 जून 2002

2.डॉ. आगलावे प्रदीप, आदिवासी समाजाचे समाजशास्त्र, श्रीत्र साईनाथ प्रकाशन, नागपुर, जुलाई 2010

3.डॉ.रानडे अशोक, संगीत विचार, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई 2009

4.सिंग निवेदिता, ट्रेडिशन ऑफ हिन्दुस्थानी म्युझीक , कनिष्क प्रकाशन, दिल्ली 2004

5.www.google.com, Images. Com. Date on 12/3/2013 at 10 p.m.

6.Htt.google, The trible culture museum, pune, posted on 1 July 2012

7.डॉ. कालभूत पुरूषोत्तम, लोकसाहित्य –स्वरूप आणि विवेचन, विजय प्रकाशन 10 जानेवारी 2007

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net